



# Ancient Vedic Mantras and Rituals





## Shrimad Bhagavad Gita Chapter-4 Shalok-3 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय चार-श्लोक तीन | PDF

### अध्याय 4 – ज्ञान कर्म संन्यास योग श्लोक 3

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ।  
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥3॥  
सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

हे अर्जुन! वही यह प्राचीन और दिव्य योग आज मैंने तुम्हें बताया है, क्योंकि तुम मेरे भक्त और प्रिय सखा हो। यह योग अत्यंत उत्तम और गहरा रहस्य है, जिसे हर व्यक्ति आसानी से नहीं समझ सकता।

### विस्तृत व्याख्या

भगवान द्वारा प्राचीन योग का पुनः उपदेश

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि उन्होंने वही प्राचीन योग, जो पहले गुरु-शिष्य परम्परा से चला आ रहा था, आज पुनः अर्जुन को बताया है।



यह वही ज्ञान है जो समय के साथ संसार में लुप्त हो गया था। भगवान इसे अर्जुन को इसलिए प्रदान करते हैं ताकि वह कर्म, ज्ञान और धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझ सके।

## अर्जुन भगवान के भक्त और सखा हैं

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को अपना भक्त और सखा कहते हैं। अर्जुन के साथ भगवान का संबंध केवल गुरु और शिष्य का ही नहीं था, बल्कि उसमें प्रेम, विश्वास और मित्रता भी थी।

अर्जुन भगवान के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखते थे तथा भगवान के निर्देशों को समझने और उनका पालन करने के लिए तैयार थे। इसी कारण भगवान ने उन्हें इस गूढ़ आध्यात्मिक ज्ञान का अधिकारी माना।

## भक्ति और विश्वास का महत्व

इस श्लोक से यह स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक ज्ञान को समझने के लिए केवल बुद्धि ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए श्रद्धा, भक्ति और भगवान के प्रति विश्वास भी आवश्यक है।

जब मनुष्य अहंकार को छोड़कर विनम्रता से ज्ञान प्राप्त करता है, तब वह उसके वास्तविक अर्थ को बेहतर ढंग से समझ सकता है।

## यह उत्तम रहस्य है

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि यह योग “रहस्यं ह्येतदुत्तमम्”, अर्थात् अत्यंत उत्तम और गहरा रहस्य है।



यह रहस्य किसी छिपी हुई वस्तु का नहीं, बल्कि जीवन के वास्तविक उद्देश्य और कर्म के सही स्वरूप का है। मनुष्य किस प्रकार अपने कर्तव्यों को करते हुए आसक्ति से मुक्त रह सकता है और आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है, यही इस योग का गहरा संदेश है।

## ज्ञान के लिए योग्य पात्रता

भगवान ने यह ज्ञान अर्जुन को इसलिए दिया क्योंकि वह उनके भक्त और सखा थे। इससे यह शिक्षा मिलती है कि दिव्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यक्ति में श्रद्धा, विश्वास, विनम्रता और सत्य को समझने की इच्छा होनी चाहिए।

केवल ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे जीवन में अपनाने की भावना भी आवश्यक है।

## अर्जुन को योग का पुनः ज्ञान

पिछले श्लोक में भगवान ने बताया था कि समय के साथ यह प्राचीन योग संसार में लुप्त हो गया था। अब इस श्लोक में भगवान बताते हैं कि वही प्राचीन योग उन्होंने अर्जुन को पुनः समझाया है।

इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्मयोग का वह सनातन ज्ञान प्रदान करते हैं, जो मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग दिखाता है।



## मुख्य बिंदु

- भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को वही प्राचीन और दिव्य योग बताया।
- यह योग सनातन और अत्यंत महत्वपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान है।
- अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण के भक्त और प्रिय सखा थे।
- भक्ति और विश्वास के कारण अर्जुन इस गूढ़ ज्ञान को प्राप्त करने के योग्य बने।
- आध्यात्मिक ज्ञान को समझने के लिए श्रद्धा, विनम्रता और समर्पण आवश्यक है।
- यह योग कर्म, ज्ञान और धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझाता है।
- भगवान ने समय के साथ लुप्त हुए इस प्राचीन योग को पुनः अर्जुन को बताया।
- यह ज्ञान मनुष्य को कर्म करते हुए आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग दिखाता है।

## गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक हमें बताता है कि परमात्मा का ज्ञान सनातन है और समय के साथ उसका महत्व समाप्त नहीं होता। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को यह ज्ञान इसलिए देते हैं क्योंकि अर्जुन उनके भक्त और सखा हैं तथा इस दिव्य ज्ञान को समझने के लिए योग्य पात्र हैं।



इस श्लोक का गहरा संदेश यह है कि भक्ति, श्रद्धा और विश्वास के साथ प्राप्त किया गया आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्य के जीवन को सही दिशा दे सकता है। जब मनुष्य अपने कर्तव्यों को भगवान को समर्पित करके निष्काम भाव से करता है, तब उसके कर्म आध्यात्मिक उन्नति का साधन बन जाते हैं।

**पदों का भावार्थ**

सः – वह

एव – ही

अयम् – यह

मया – मेरे द्वारा

ते – तुम्हें

अद्य – आज

योगः – दिव्य योग

प्रोक्तः – कहा गया, बताया गया

पुरातनः – प्राचीन, सनातन

भक्तः – भक्त

असि – हो

मे – मेरे

सखा – मित्र



च – और

इति – इस प्रकार

रहस्यम् – गूढ़ रहस्य

हि – निश्चय ही

एतत् – यह

उत्तमम् – अत्यंत उत्तम, श्रेष्ठ

**श्लोक का संदेश**

भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि उन्होंने वही प्राचीन और सनातन योग अर्जुन को पुनः बताया है, क्योंकि अर्जुन उनके भक्त और सखा हैं। यह योग अत्यंत उत्तम और गूढ़ आध्यात्मिक रहस्य है। यह श्लोक हमें सिखाता है कि श्रद्धा, भक्ति, विश्वास और समर्पण के साथ प्राप्त किया गया ज्ञान मनुष्य को कर्म के बंधन से मुक्त होकर आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जा सकता है।



## RELATED ARTICLE



[Chapter-4 Shalok-1](#)



[Chapter-4 Shalok-2](#)



# THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS  
CONTENT ON



[vedicprayers.com](https://vedicprayers.com)

